रवीन्द्र कालिया के कथा साहित्य में मुस्लिम परिवेश

डॉ.दारा योगानंद

भूमिका: आज का प्रत्येक कहानीकार अपने परिवेश के प्रति जागरुक रहा है। लेखक रवीन्द्र कालिया भी उन कहानीकारों मे से एक हैं जिन्होंने यथार्थ का सच्चाई के साथ स्वीकार किया है।उनके कथा साहित्य में हिन्दुओं एवं मुसलमानों के जीवन को बहुत बारीकी से दर्शाया गया है। जहाँ एक तरफ़ हिन्दुओं के रीति-रिवाज़, परिवार,जीवनगत परिस्थियों का जिक्र है, वहीं मुस्लिम समाज के प्रति भी उनकी दृष्टि पैनी हैं।

कथा साहित्य में मुस्लिम परिवेश:

लेखक रवीन्द्र कालिया के कथा साहित्य में मुसलमानों का विस्तारपूर्वक चित्रण मिलता है । जिसमें उन्होंने उनके धर्म, रीति-रिवाज़, गरीबी और उनकी मनास्थिती का वर्णन किया है । एक हिन्दू लेखक होने के बावजूद जिस अव्वल किस्म की उर्दू का वे प्रयोग करते है अपनी कहानियों में,उससे उनकी भाषा पर पकड़ का ज्ञान होता है।यही नहीं, मुसलमानों के घर का वातावरण,बोलचाल, लड़ाई झगड़े,परिवार में कट्टरता आदि का बहुत ही सरल एवं यथार्थ चित्रण मिलता है।

"**नया कुरता**" नामक कहानी में साहिल नाम के एक लड़के की कहानी है, जिसके पिता बचपन में ही उसे और उसकी माँ को छोड़ चला है। अपने शोहर के बिना माँ बच्चे की परवरिश संभाल लेती है। वह बीड़ी बनाती है, घर चलाती है। वह खुदा से डरने वाली थी, पाँचों वक्त का नमाज़ अदा करती थी,लेकिन साहिल अपनी हरकतों की वजह से अपनी माँ को परेशान करता है; वह छोटी उम्र में ही बीड़ी पीने लग जाता है ; वह मेहरुन्निसा का चुम्बन लेने की कोशिश में पिट जाता है। उसे स्कूल से निकाल दिया जाता है।यहीं, नहीम, वह अपने ही घर में चोरी भी करता है, वह २० रुपया चुराता है और बिना किसी को बताये घर छोड़ कर भाग जाता है।वह अपने पिता को ढूँढने की कोशिश करता है।साथ ही एक नये जीवन की शुरुआत करता है।कोई काम न होने की वजह से वह मर्सिया पढ़ने का रियाज़ करता है, जिसकी वजह से उसे निमंत्रण मिलने लगते हैं।एक बूढ़े कबाडिये से उसे एक जंग लगी इस्त्री मिलती है, जिसे वह साफ़ कर उसे चमका कर उससे एक लांड्री खोलने का प्रयत्न करता है। वह इस नये पेशे को शुरु करने के लिए कोयला और कपड़े का जिगाड़ करता है। अशरफ़ मिया से इस्त्री,नसरीन आपा से कोयला और कल्लू मिया से दूकान लगाने के लिए कुछ जगह हासिल करता है। वह मन लगा कर कोशिश करता है, उसके दोस्त भी उसकी मदद करते है। साहिल जब अपने पैरों पर खड़ा होने और बिरादरी में सर उठा कर चलने की कोशिश करता है, तो उसी के बिरादरी वाले उससे ईर्ष्या करने लगते है;साहिल का नया कुरता उन सब की आँखों में कटकता है। जैदी साहब तो सबसे ज्यादा भड़क उठते हैं।हमारे देश में यह एक बहुत ही बुरी चीज है कि किसी को दूसरों की तरक्की पसंद नहीं।इस कहानी में भी साहिल की

अपनी बिरादरी के लोगों को यह बिलकुल रास नहीं आया कि कल का छोकरा उनसे आगे बढ़ जाये।साहिल का नया कुरता तार-तार हो जाता है, वह उस जगह को छोड़ कहीं दूर चला जाता है।

लेखक ने इस कहानी में मुसलमानों की जीवन-स्थिति को अपनी लेखनी से चार चाँद लगाये हैं। इस कहानी में पात्रों की मन:स्थिति, परम्पराएँ, परेशानियों का जिस ढ़ंग से चित्रण मिलता है, उससे उनकी तीक्ष्ण बुध्दि का एवं उनके अनुभव का पता चलता है। साहिल जैसे पात्र हमारे पड़ोस से मिलते-जुलते लगते है। ज्यादातर मुस्लिम परिवारों की घरेलू समस्याँए उनकी गरीबी की वजह से उत्पन्न होती है, जिस तरह साहिल छोटी उम्र से ही कमाई करने के बारे में सोचता है और स्कूल छोड़ कर बुरी आदतों का शिकार होता है। दूसरी तरफ़ लेखक ने मुस्लिम परिवारों की स्त्री का बी चित्रण किया है। साहिल की माँ अपने खाविंद के बगैर भी हिम्मत के साथ अपनी गुजारा चलाती है।वह मन में ठान लेती है कि व्ह अपने खाविंद के बगैर भी अपने बच्चे की परवरिश कर सकती है। समाज की रुढिवादिता को छोड़ कर रोने धोने के बजाय वह बीड़ी बनाने का काम करती है।

इस कहानी में जिस तरह साहिल को पता चलता है कि उसके अब्बा कहीं दूसरी जगह घर बसाके रह रहे हैं, तो वह अपने अब्बा से मिलने अपने भाई-बहनों के साथ रहने के लिए घर छोड़ देता है। मुस्लिम समाज में एक से अधिक शादी करने का नियम मान्य है, जिस वजह से मुस्लिम समाज में कई पारिवारिक समस्याँए उत्पन्न होती है।खासतौर पर स्त्री का ही शोषण देखने को मिलता है।उसे मात्र बच्चे पैदा करने की मशीन के रुप में देखा जाता है।उसे किसी तरह का अधिकार नहीं दिया जाता है।युगों सेवह अपने अधिकारों के लिए लड़ रही है।

लेखक की एक और कहानी “**सुन्दरी**” भी मुस्लिम परिवेश को उजागार करती है।इस कहानी में लेखक ने मुस्लिम परिवारों की गरीबी, उनकी समस्याँए आदि से रु-बरु कराया है। यह ज़हिर मियाँ नाम के ताँगे वाले की कहानी है। मुस्लिम समाज में बच्चे खुदरत की देन समझे जाते हैं। यही वजह है कि वे इस पर किसी तरह की बंदिश नहीं लगा सकते , जिसका परिणाम बच्चों की कतार । ज़हिर मियाँ और उनकी बेगम ज़हीरन से उन्हें नौ बच्चे हुए। इतने बच्चों की देखभाल, परवरिश कोई मामूली बात नहीं होती। छोटे से घर में इतने बच्चों के साथ गुजारा करना बहुत ही कठिन है, परंतु यह कोई बड़ी समस्या नहीम है, भारत देश में।समस्या तब शुरु होती है जब खाने के लाले पड़ जाते है।ज़हिर मियाँ के बीमार पड़ने पर उसकी बेगम दूसरों के घर जाकर चौका बर्तन करती है। घर गृहस्थी की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेती है।स्त्रियों की निड़रता, उनकी हिम्मत की दाद देनी पड़ेगी, पुरुष चाहे कितना भी शोषण क्यों न करे, वह हमेशा पतिव्रता स्त्री ही बनी रहती है।इस कहानी में यह भी देखने को मिलता है कि कम उम्र में ही शादी रची जाती है। ज़हीर मियाँ के बेटे अमज़द भी कम उम्र में ब्याह करता है।

शिक्षा का अभाव और छोटे-छोटे काम धंधे करके परिवार तथा अपनी ज़िन्दगी चला रहे होते है।गरीबी में जीना तो उनकी आदत सी हो गई है। सलमा ज़हीर मियाँ की बेटी के फ़टे कपड़े से जब लोगों का समूह उस ओर आकर्षित होता है तो ज़हीर मियाँ उसे बहुत मारते हैं और घर की चार दीवारों में बंद करते है। इसमें सलमा का दोष नहीं, गरीबी ही लोगों को क्रूर बना देती है,जिस वजह से हमें अपनों के साथ भी मारपीट करना पड़ता है।

इसी तरह उनकी एक और कहानी "**ज़रा सी रोशनी**" में साम्प्रदायिक समस्या देखने को मिलती है। जब एक कालोनी बसाई गई है सरकार द्वारा, और उस कालोनी के पीछे मुस्लिम बहुल बस्ती है। कालोनी के उजड़ जाने पर यहाँ अधिकांश हिन्दू लोग आ कर बस गये हैं। हिन्दुओं और मुस्लमानों के बीच भाईचारा थी। कुछ लोगों का तो सिर्फ़ दुआ सलाम तक ही बात थी। इस कहानी में मस्जिद की अजाँ उस कालोनी में रहने वाले कुछ हिन्दुओं को रास नहीं आती थी, इसलिए वे कालोनी में मंदिर बनाने की सोचते हैं।यह साम्प्रदायिकता की बू अवश्य देखी गई है, परंतु सिंह साहब जैसे लोगों के नेक विचारों से उन कट्टरपंथी ईर्ष्या ग्रस्त हिन्दुओ को खूब फ़टकार पड़ती है। लेखक ने इस कहानी में हिन्दुओं की संकीर्ण मानसिकता को दिखाया है। वहीं वे दूसरी तरफ़ बच्चों की नादान मानसिकता दिखाते है। किस तरह पार्क में जब हिन्दू-मुस्लिम बच्चे क्रिकेट मैच खेलते हैं, तो वे अपने टीमों का नाम भारत और पाकिस्तान रखते हैं।यह मुस्लिम बच्चों की टीम अपने को अज़हर की टीम बोल कर टीम का नाम हिन्दुस्तान रखते हैं, तो हिन्दू बच्चे इमरान की टीम का नाम पाकिस्तान रख कर खेल खेलते है। इससे उनकी देश के प्रति एवं आपसी भाईचारे को व्यक्त किया गया है। मुस्लिम बच्चे भारतीय मुस्लिम कहलाने में फ़क्र महसूस करते है।

मंदिर मस्जिद का झगड़ा कुछ लोगो के स्वार्थवश ही पनपता है, नहीं तो भारत देश में सदियों से एक दूसरे के साथ जीते आते भारतवासी एक दूसरे के शत्रु कभी नहीं बनते। यह तो अंग्रेजो की करतूत है, जो देश को विभाजित कर गये और स्वतंत्र भारत में राजनेता साम्प्रदायिकता का राग अलाप कर देश में हिंसा फ़ैलाते रहे ।

लेखक ने बहुत गंभीरता से कहानी को रचा है।साम्प्रदायिकता हिन्दू मुसलमानों के बीच नहीं, बल्कि कुछ संकीर्ण विचार वाले एवं कटटर पंथी लोगों का नतीजा है। इस तरह इस कहानी में मुसलमानों का हिन्दुओं के साथ संबंध दर्शाया है।

इसी तरह उनकी कहानी "**इस तरफ़ का अंधेरा**" में भी मुस्लिम समाज का चित्रण मिलता है।साहिल अपने बचपन के दोस्त मसूऊद से जब मिलता है तो उसकी रईसी से प्रभावित होता है, परंतु जैसे-जैसे वह उसके साथ वक्त गुजारता जाता है साहिल डरने लग जाता है। मसऊद गैरकानूनी काम करता है,उसके पास चुरी,बंदूक इत्यादि देखकर ही उसके हाथ-पाँव काँपने लगते है। साहिल मसऊद से सिर्फ़ अच्छी नौकरी पाने की इच्छा

रखता है, परंतु मसऊद उसे अपने गलत कार्यों में लगा कर उसे फ़ँसा देता है।साहिल जैसा भोला-भाला लड़का गलत लोगों के हाथों में पड़कर अपनी जिन्दगी खराब कर लेता है। उसे अपनी माँ और बहन की याद भी आती है, जब वह हवालात में बंद होता है।

लेखक ने इस कहानी में छोटे से परिवार एवं बस्ती में रहने वाले मुस्लिम लोगों का वर्णन किया है, जिनमें साहिल, हजरी बी, अजीजन बी, मसऊद जैसे पात्रों के बारे में बताया है, साथ ही करबला की वह शहादत, मस्जिदों की अजाँ, ईद का त्यौहार, इत्यादि का बीच बीच में वर्णन किया है। लेखक का उपन्यास "**खुदा सही सलामत है**" में भी हिन्दू-मुस्लिम जनता का चित्रण मिलता है।खासतौर पर समाज में तिरस्कृत या बदनाम लोग, तवायफ़ या नाचनेवाली स्त्रियों की कहानी बयान की है।काशी की मशहूर हुसना भाई के भाषण से इस इस उपन्यास की कहानी बढ़ती है। हज़री बी, अज़ीजन बी,गुलबदन, नफ़ीस,सिद्दीकी साहब, लतीफ़, हसीना इत्यादि पात्र इस उपन्यास में मुस्लिम परिवेश में बंधे हुए दिखाई पड़ते है।लेखक ने एक तरफ़ हज़री बी एवं पंडिताइन के बीच की कहानी को दिखाई है तो दूसरी तरफ़ मौलाना शफ़ी और शिवलाल की दोस्ती भी। सिद्दीकी साहब को चुटयै नेता के रुप में पाते है। अब्दुल चक्की वाला,वाकर, सारंगी, नवाब साहब, रब्बन बी जैसे पात्र भी इस उपन्यास में चित्रित है।

संपूर्ण कहानी मुस्लिम परिवेश से बंधी है। पात्रों की भाषा अव्वल किस्म की उर्दू का प्रयोग, बंटवारे की समस्या, पाकिस्तान जाने वाले भारतीय मुस्लिम लोग, समाज में नाचने गाने वालियों की अज़ाद भारत से पूर्व शान-शौकत, मान मर्यादा आदि वर्णित हैं तो आज़ादी के उपरांत समाज में खास तौर पर हिन्दू लोग इन तवायवों से दूर ही रहते है। उन्हें समाज में बुरी दृष्टि से देखा जाता है।हज़री बी जैसे तवायफ़ तो गरीब की मार झेलती, गाली-गलौच करती, साथ ही दूसरे लोगों कि मदद करती दिखाई पड़ती है।वे अपने कमिशनर साहब को भी कभी-कभी याद कर लेती है। लोग उसके साथ बहुत हँसी मजाक करते है, उसे तंग करते है, तो वह भी उनका मुँह बंद करना जानती है।

दूसरी तरफ़ अज़ीजन बी भी अपनी अमीरी की वजह से पूरे मुहल्ले में मशहूर है। आलीशान बंगले में रहती है।धन की कोई कमी नहीं है। समाज में आज भी उसकी बहुत इज्जत है। अज़ीजन बी तवायफ़ हो कर भी अपनी बेटी गुल को अपने पेशे से दूर ही रखती है, उसे अच्छा पढ़ाती है, उसे विश्वविध्यालय तक पढ़ने भेजती है। गुल होनहार लड़की है जो पढ़ाई लिखाई ही नहीं खेल और अन्य क्षेत्रो में भी कई पुरस्कार प्राप्त करती है। उसे उसके कालेज के प्रो०शर्मा से प्रेम हो जाता है परंतु दोनों एक दूसरे को पसंद करने के बावजूद समाज के डर से, बिरादरी के डर से वे एक दूसरे से ब्याह नहीं कर पाते है।अज़ीजन बी को इस बात से दु:ख होता है। वह चाहती है कि उसकी बेटी अच्छे खानदान में जाए, उसका सम्मान हो परंतु समाज उसे रोकता है।

लेखक ने बहुत सारे मुद्दों को जो मुस्लिम समाज से जुड़े हैं, उन्हें उभारना चाहा है। राजनीतिक मामला हो या सामाजिक मामला लेखक ने कोई कसर नहीं छोड़ी। समाज में बदनाम तवायफ़ो के बारे में कोई इतना अच्छी तरह से लिख सकता है तो वह रवीन्द्र कालिया ही हो सकता है। वे वेश्याओं के भिन्न जातियों का जिक्र करते हुए बताते है कि कंचन जाति की वेश्या अन्य जातियों से श्रेष्ठ होती है।

इस उपन्यास में अन्तर्जातीय विवाह के रुप में प्रो० जितेन्द्र मोहन शर्मा और गुल को देखा जा सकता है।समाज को यह कताई स्वीकार नहीं था। सिद्दीकी साहब जो सभी के नेता बने फ़िरते है,वे अपने ही कौम की लड़की गुल का किसी हिन्दू लड़के से शादी हो, कभी तैयार नहीं थे। वे अज़ीजन बी से कहते है “तो क्या आप एक हिन्दू काफ़िर से अपनी बिटिया की शादी करेंगी?”१ आज भी समाज में प्रेम विवाह को स्वीकारा नहीं जाता और यह तो दो विभिन्न कौमों से जुड़ी बात है। आज भी भारत देश में मुश्किल से पाँच प्रतिशत लोग ही अन्तर्जातीय विवाह कर पाते है। हिन्दुओं को मुसलमानों से शादी जैसे संबंध स्वीकार नहीं है।गुल की माँ अज़ीजन की परेशानी थी कि एक तवायफ़ की बेटी से शादी करने में खानदानी मुसलमान बहुत परहेज कर रहे थे। अज़ीजन को तो प्रो० शर्मा पसंद थे, उनकी बेटी को भी वे पसंद थे, मगर दोनों की शादी कहीं हिंसा का रुप न ले ले, इसका उन्हें डर था।

उपसंहार:

समकालीन हिन्दी कहानी अपने परिवेश के प्रति अत्यंत जागरुक रहा है। कथाकार जिस वर्तमान में जीवित रहते है उसे ही अपने अंदर अनुभव करते है।रवीन्द्र कालिया भी ऐसे ही विरले रचनाकार है, जिन्होंने अपनी कहानियों में वास्तविकता को ही स्थान दिया है। उनकी कहानियाँ चाहे राजनीतिक हो या सामाजिक, वे परिवेश को ध्यान में रखते है।जिस तरह उनका कथा साहित्य मुस्लिम परिवेश का चित्रण करती है उससे उनकी एक अलग छवि देखने को मिलती है।वे हिन्दू एवं मुस्लिम संस्कृति के रग-रग से अच्छी तरह से वाकिफ़ है।साथ ही भाषा के जादूगर भी है।उनकी कहानियों में मुस्लिम परिवेश का चित्रण यथार्थ के धरातल पर दिखता है।

संदर्भ ग्रंथ:

१. लेखक: रवीन्द्र कालिया, किताब:खुदा सही सलामत है, पृष्ट सं ३६१, प्रकाशक:राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली,संस्करण: २००५
२. लेखक: रवीन्द्र कालिया , किताब:चकैया नीम, प्रकाशक:लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण:१९८२
३. लेखक: रवीन्द्र कालिया , काला रजिस्टर, प्रकाशक: लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण:१९८६
४. लेखक: रवीन्द्र कालिया , ज़रा सी रोशनी, प्रकाशक: लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण:२००२
५. लेखक: रवीन्द्र कालिया , गालीब छुटी शराब, प्रकाशक:वाणी प्रकाशक, नई दिल्ली, संस्करण:२०००

डॉ.दारा योगानंद

सहायक आचार्य

एम्स इंस्टिट्यूट, पीण्या, बेंगलुरु-५६००५८